सब्जियों के नाम

अनीता गंगाधर शर्मा

मिति को छुट्टियों में दादी के पास जाना बहुत पसंद था। उसे वहाँ का वातावरण नदी का किनारा, तालाब की पाल, करतब दिखाते बकरी के बच्चे, इधर-उधर दौड़ लगाते खरगोश सब बहुत लुभाते थे।

घर के दूध-दही के तो कहने ही क्या। दादी के पास दो गाय थी एक बिल्कुल काली जिसका नाम था गौरा और दूसरी बिल्कुल सफेद जिसका नाम था कल्लौ।

कल्लौ की बछिया बहुत भोली थी, और दूसरी तरफ गौरा की बछिया खूब शरारती थी। लेकिन थी बड़ी सुंदर वह मां जैसी बिल्कुल नहीं थी। वह तो झक सफेद थी और उसके माथे पर लगा काला टीका उसकी सुंदरता में चार चाँद लगा देता था।

दादी ने दूध बिलोने का काम पड़ोस में रहने वाली संतो काकी को सौंप रखा था, जिससे दादी और उसे घी और छाछ दोनों का सुख तो था ही साथ ही आमदनी भी हो जाती थी।

गाँव के बाकी घरों में तो बिजली वाली रई काम में लेते थे लेकिन संतो काकी आज भी लकड़ी वाली बड़ी रई से ही दादी का सारा दही बिलौती थी। गाँव के लोग तो कहते भी थे। संतो रई ऐसे चलती हैं मानो कोई खेल-खेल रही हो।

गाँव में पानी की कोई कमी नहीं थी। इसलिए वहाँ अधिकतर लोग धान की खेती करते थे। दादी ने अपने खेत बटाई पर दे दिए थे। जिसमें धान की पौध नियाराम और सुंदरम ही बोते थे।

दोनों भाई पैसे की जगह फसल का 40% धान दादी को देते थे और बाकी खुद रखते थे। दादी के लिए इतना धान काफी था। दादी अपनी दिनचर्या के सारे काम स्वयं ही करती थीं।

बरसात के दिनों में गाँव की पाल पर मेंढक रोज शाम टर-टर चिल्लाना शुरू कर देते थे, जो शायद सूर्य देव के दर्शन करके ही चुप होते थे। दादी बस अड्डे के पास लगने वाली सब्जी मंडी से शाक टहल कदमी करते हुए ही लाती थीं।

पालक, तोरई, धनिया, मटर, कटहल